

# Trigun - Bhartiy Sanskruti Ka Mahatva

Date	:	3rd February 1978
Place	:	Delhi
Type	:	Public Program
Speech Language	:	Hindi

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 23
English	-
Marathi	-

### II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

जिस शक्ति को आप इस्तेमाल कर रहे हैं उसे Refill कर लेते हैं हम। Modern बीमारी एक और है जिसे हम Tension कहते हैं। 'Tension' मुझे Tension आ गया, पहले किसी को Tension नहीं आता थी। तब तो Tension आना ही हुआ कि आप निकले पुरानी दिल्ली से माताजी के Programme में जाने के लिए। अब 6.30 बजे पहुँचना ही चाहिए, पहले सीट पर बैठना ही चाहिए। देर से जाएंगे, कोई हर्ज नहीं, देर से भी आ सकते हैं। वो समय आप के आने का था आप आ गए। कोई बात नहीं। ऐसी कौन सी आफत मची हुई है? भाई मुझे कहाँ जाने का है और आपको कहाँ जाने का है? आराम से बैठेंगे दो चार बातें करेंगे, चलो हो गया सहजयोग पूरा। कौन सी आफत मचाने की चीज है? कोई नहीं। इतने सरल सहज आराम से बैठिए वैसे ही आप को सहजयोग प्राप्त होगा।

मैं देखती हूँ कि सहजयोग में भी लोग इस तरह से Planning करते हैं। मुझे आती है बड़ी हँसी। जैसे आप ये कहें कि दो दिन बाद यहाँ पर फल लगेगा तो मैं मान जाऊँ। दो दिन बाद 5 बजे कर 6 मिनट पर यहाँ पर फल लगेगा इस फूल में, ये अगर आप कह दें और करके दिखा दें तो मैं मान जाऊँ। जो लोग जितना Planning करके यहाँ पर आते हैं उतना उनकी कुण्डलिनी नहीं जागृत होती। सहज समाधि लागो, सहज लगती है। सहज माने बिल्कुल साधारण तरीके से। ऐसे ही जो लोग होते हैं उनको ही मिलती है। अब काहे मार-धाड़ किए हो भाई? ऐसी कौन सी आफत आ गई? अभी मुम्बई में एक Programme हो रहा था तो एक साहब ने कहा चलो भाई Music

चल रहा है, माताजी थोड़ा म्यूजिक कर दें? हमने कहा कर दो भाई। ऐसे ही बैठेंगे आराम से। हमारे तो Vibrations चलते रहते हैं, आप Receive करते रहिए। अब उन्होंने ज़रा लम्बा चौड़ा कर दिया जरा Music, तो लोग कहने लगे अब जरा जल्दी खत्म करो, जल्दी खत्म करो। मैंने कहा क्यों भाई तुमको मेरा Lecture सुनने का है पर मेरी तो आज तबीयत नहीं कर रही। अपने तो तबीयत से चलते हैं, Temperamental आदमी हैं, अभी आज तो भाई तबीयत हो नहीं रही। तो म्यूजिक ही सुनने दो, तुम भी सुनो मेरे साथ। आराम से क्यों नहीं सुनते? अच्छा म्यूजिक चल रहा है, भाई सुनो। ऐसी कौन सी आफत आई है? मेरे तो चल ही रहे हैं Vibrations, मैं चाहे भाषण देऊँ, चाहे नहीं देऊँ, वो तो चल ही रहे हैं। हर समय कार्यान्वित हैं। एक क्षण भी नहीं रुक रहे। अरे Lecture ही मैं क्या रखा है वो मेरी समझ में ही नहीं आया। सब शान्ति से बैठें। अच्छा भला म्यूजिक चल रहा है, बीच में आप क्यों चिल्ला रहे हैं? हम लोगों को आदत ही पड़ गई है। ये आदतें छूटती नहीं। आराम से पाँच मिनट बैठकर के हम लोग किसी से कभी बात नहीं करते। कोई गर अपने यहाँ दोस्त आया तो कहेंगे चल भाई तेरे को खाना खिलाऊँ। बीवी घर के अन्दर खाना बनाएगी, आप बैठे हुए वहाँ पर Politics झाड़ेंगे। कुछ भी नहीं हो तो T.V. चला लेंगे। सब लोग T.V. देखो। अरे भाई आपस में कुछ आदान-प्रदान करो, कुछ बातचीत करो।

आपने बुलाया है दोस्त को, आप T.V. लगा कर बैठे हैं? आपस में अनजाने ही आप चले जाते हैं। ये फिर दोस्ती नहीं होती, दोस्ती किससे है आपको?



कोई दोस्त ही नहीं है आपका। दोस्ती तो तब आती है जब आपस में कोई मज़ा उठाया जाए। दोस्ती उसे कहते हैं। आजकल दोस्ती का मतलब है कि Business आ गया, नहीं तो फिर ताश खेलो, ताश खेलने बैठ गए। तब तक भी ठीक है। फिर रुपया लगाया, काम खत्म। ताश में आप रुपया लगाइए, जिसने ताश में रुपया लगा लिया काम खत्म।

अब हमने ये कहा कि आप balance में रहिये। Balance में रहने का तरीका ये है कि आप ज़रा बैठिए, ज़रा देखिए, मजा देखिए। सवेरे सूरज उगता है, आकाश में देखिए कितने सुन्दर रंग आते हैं? यू ही चला जाता है। शाम को सूरज डूबता है इतने सुन्दर रंग उगते हैं, सब वैसे ही चला जाता है। कितने ही फूल खिलते हैं कितनी ही बहार आती हैं, कितने ही रंग बदलते हैं, ऐसे ही सारा काम चला जाता है। कितने ही लोग मिलते हैं सबसे मिलते हैं और बगैर मिले ही लोग चले जाते हैं बिल्कुल अजनबी। कभी जाना ही नहीं! कोई मर गया तो उसके लिए फूल भेज दिया, चलो हो गया काम खत्म। जहाँ सबसे ज्यादा रजोगुण हो गया है वहाँ तो ये हालत है कि कोई मरता है, बाप भी मरता है तो पेपर में आ जाता है कि भई मर गए। वो बाप पहले से ही पैसे दे जाते हैं कि गर मैं मर जाऊँगा तो मेरा एक सूट सिला देना नया, मेरे को पहना देना और वहाँ लिखा जाता है कि फलानी तारीख को आप देख लीजिए उनकी Body पर। वो दिखा देते हैं, देखो भई उनको सूट सिला दिया, अब ये मर गए। सब लोग आते हैं, उसमें एक-एक फूल चढ़ा दिया, चले गए अपने घर। तो ये वहाँ हालत है। कोई आदान प्रदान नहीं, कोई दोस्ती

नहीं, कोई Friendship नहीं, कोई पहचान नहीं, कुछ नहीं। नानी के घर आप जाइए वहाँ पर नानी कहेंगी कि तू मेरे Telephone के दो पैसे दे, तब तू घर में पैर रखना। तुमने उस दिन टेलिफोन किया था, उसके पैसे नहीं दिए थे, पहले उसके दो पैसे दे, सारी चीज़ यही हो गई। इस तरह के artificial जीवन में भी imbalance आ जाता है क्योंकि artificiality के साथ रहना पड़ता है। किसी के घर जाइए साहब खाने पर बुलाते हैं, 8.00 बजे के गर 8.30 बज गए तो मार चीखना शुरू कर दिया। क्या अपने घर खाने को नहीं मिलता है क्या? देर हो गई तो कौन आफत आ गई? आ गए 8.30 आए चाहे 9.00 बजे आए। क्या हुआ? आओ बैठो आराम करो। Punctuality काहे के लिये चाहिए इतनी ज्यादा? जरूरत से ज्यादा Punctuality करने की जरूरत नहीं। हाँ Punctuality एक चीज़ में होनी चाहिए कि अपने अन्दर जो परमात्मा का call है उसकी ओर Punctuality होनी चाहिए। इस वक्त परमात्मा ने हमें याद किया है फौरन ध्यान में चले जाएं। Vibrations आ रहें हैं फौरन ध्यान में चले जाएं। उस मामले में नहीं है Punctuality हमारे अन्दर। इससे क्या होगा, Punctuality से हुआ क्या? यही suicide जिन देशों ने Punctuality बहुत रखी उन्होंने क्या प्राप्त किया? Punctuality से लोग आत्महत्या करते हैं, आत्महत्या का भी time लिखते हैं। हमारे यहाँ Punctuality पहले होती थी। इस तरह से कि हम पंचांग देखकर के Punctuality बनाते हैं। ये महूर्त अच्छा है, इस मुहूर्त पर ये कार्य करने से अच्छा है। उसमें तो कुछ तो आपने Consult किया Superior power को। परमात्मा से कुछ लेन-देन को



Consult किया, लेकिन ये जो बिल्कुल हमारी दैनंदिन इस तरह की Punctuality और इस तरह का हम लोगों का बिल्कुल यांत्रिक जीवन हो गया है इस जीवन से आप लोग ऊब जाएंगे, परेशान हो जाएंगे, घबरा जाएंगे। वही सवेरे उठना, वही दाढ़ी बनाना, वही मुँह धोना, वही दफ्तर जाना, वही आदतें। फिर वही घर पर आना, फिर वही बातें। आप लोग घबरा जाएंगे। घबराहट से फिर शुरू क्या होगा? वही चीज़ जो वहां हो रही है गांजा, LSD और उससे भी नहीं तो हमेशा बेहोश रहना। मतलब पलायनवाद, भागो, इस दुनिया में जीने की क्या ज़रूरत है? जब मनुष्य जीवन में बोर हो जाता है तभी वह पलायनवादी जीवन को खोजता है। मनुष्य बोर इसलिए होता है क्योंकि वो अपने को जानता नहीं। जब वह अपने को जानता है तो मस्ती चढ़ती है क्योंकि आप अपने अन्दर इस कदर सुन्दर, इतने व्यवस्थित, इतने मधुर हैं कि फिर ज़रूरत नहीं किसी की। आप अपने ही साथ बैठे रहते हैं, बड़ा मज़ा आता है। जब आप अकेले होते हैं तब सब से अच्छे रहते हैं, बड़ा मज़ा आता है। अपने ही जीवन को देखते रहते हैं, अपने ही अन्दर अपने स्वर्ग को देखते रहते हैं। हाँ जब दूसरों से मिलते हैं तो ये लगता है कि ये भी इस स्वर्ग में हमारे साथी हैं। जैसे दो शराबी बैठ जाते हैं तब उन्हें मज़ा आता है, अकेला कोई पीता नहीं। इस तरह का एक खुमार जिन्दगी भर चढ़ा रहता है। ऐसी बादशाहत गर पानी हो तो ऐसी बादशाहत अन्दर भी आनी चाहिए।

अपने अन्दर Balance लाना पड़ता है और ये धर्म से होता है। धर्म से मेरा मतलब कभी भी हिन्दु मुसलमान से नहीं होता है, आप समझ सकते हैं

इस चीज़ को। कभी भी मैं बाह्य, इस तरह से छोटे-छोटे घरोंदों में विश्वास नहीं करती। न ही मैं उन भ्रमों में विश्वास करती हूँ जो बिल्कुल ही मनुष्यों ने बनाए हैं। ये बिल्कुल ही बेकार के हैं। इन सब चीज़ों को तोड़ फोड़कर के ही अपने सहजयोग पनपा है। लेकिन धर्म का मतलब ये है कि हमारे अन्दर जो Sustenance power है, हमारे अन्दर जो बसी हुई innate धर्म है, हमारे अन्दर एक-एक अंग-प्रत्यंग में जो बनाया गया है, उसको जागृत करना चाहिए। इसके बारे में मैंने आपसे कल बताया था कि अनेक धर्म हैं। उसमें से एक, आपको आश्चर्य होगा, कि सबसे बड़ा धर्म ये है कि सर्वधर्म समान हैं। गाँधीजी ने कहा था सर्वधर्म समानत्व मानें। उसका तत्व एक है ये समझ लेना चाहिए। पेड़ के अन्दर बहने वाली शक्ति हर जगह जाती है, मूल में जाती है, उसके तने में जाती है, उसके पत्तों में भी जाती है, उसके फूलों में जाती है और फिर वो वापिस लौटकर वापिस चली आती है। कहीं भी लिपटती नहीं। इसी तरह का निर्वाज्य, इसी तरह से अलग रहने वाला जो प्रेम है और जो शक्ति है, उस शक्ति में जो एक तत्व चारों तरफ घूम रहा है उसी प्रकार सारे ही धर्मों में एक ही तत्व घूम रहा है। और वो सीधा सादा सरल तत्व एक ही है कि जब धर्म की स्थापना हमारे अन्दर हो जाती है, जब हम किसी भी धर्म के तत्व से प्लावित हो जाते हैं, उस तत्व को जब हम अपने अन्दर पूरी तरह से स्थापित कर लेते हैं, तभी हमारा evolution हो सकता है। जैसे कि हिन्दु धर्म के लोगों को एक ही तत्व सीखना चाहिए कि सबके अन्दर एक ही आत्मा का वास है। और जाति-पाति आदि चीज़ें ये जन्म से नहीं होती, ये



कर्म से होती है। यही तत्व हिन्दु धर्म का है और इसमें दूसरा कोई सा भी तत्व नहीं खोजना है। गर इस तत्व को आपने पा लिया तो आप असली हिन्दु हो गए बाकी तो आप अहिन्दु हैं। चाहे वो अपने को मुसलमान कहलाएं चाहे वो अपने को ईसाई कहलाएं। एक ही शक्ति, हम लोग तो शक्ति के पुजारी हैं न, एक ही शक्ति सब के अन्दर बसती हैं और जिस कर्म में मनुष्य लीन होता है उसी कर्म से वो जाना जाए। माने जो ब्रह्म कर्म में लीन है वो ब्राह्मण है, जितने सहजयोगी हैं सब ब्राह्मण हैं। जो ब्रह्म में लीन है वो ब्राह्मण है। जो आनन्द को सत्ता में खोजता है वो क्षत्रिय है और जो आनन्द को पैसे में खोजता है वैश्य है, जो आनन्द को किसी की सेवा में खोजता है वो शूद्र है। आपको आश्चर्य

होगा। हमारे अन्दर सेवा भाव का तो बड़ा भारी आदर्श है, सबकी सेवा करनी चाहिए, इसकी सेवा करो, उसकी सेवा करो। अब देखिए कि शूद्र क्यों कहा गया, ये सोचने की बात है। बड़े आश्चर्य की बात है कि कोई किसी की सेवा करे तो वो शूद्र क्यों है? ये सूक्ष्म बात है। इस सूक्ष्म बात को गर आप समझ लें तो आप हिन्दु धर्म को समझ लें। किसी की सेवा जो करे वो शूद्र है क्योंकि दूसरा कोई है ही नहीं। गर हम आपको ठीक करते हैं, आपकी मालिश करते हैं, आपका सिर ठीक करते हैं तो हम अपने को ही ठीक कर रहे हैं असल में, क्योंकि हमारा ही सिर पकड़ा हुआ है। आपका पकड़ा है तो, हमारे आप अंग प्रत्यंग हैं, तो हम गर इसे ठीक नहीं करेंगे, हमारे अंग प्रत्यंग को तो हमें ही



तकलीफ होती है। दूसरा कोई है ही नहीं। जिसने ये Idea ले ली कि मैं दूसरे की सेवा कर रही हूँ बहुत ही शूद्र Idea है। जिसने ये सोच लिया कि मैंने बड़े भारी अनाथालय बना लिए, मैं जाता हूँ गरीबों की सेवा करता हूँ! कौन हैं गरीब? आप हैं गरीब। मुझे गरीबी इसलिए अखरती है क्योंकि ये मेरा ही Part and Parcel है। अगर कोई इंसान संसार में गरीब है तो ये मेरे लिए insult है, मैं ही गरीब हूँ। इतनी बड़ी उच्च कल्पना को जब आप निम्न दिशा में देखते हैं इसी लिए ऐसा होता है। कोई भी बादशाह नहीं कहता कि मैं किसी की सेवा करता हूँ। वो देता है उससे बहता है, वो सेवा नहीं करता। सेवा में एक बहुत सूक्ष्म मूर्खतापूर्ण अहंकार है। किस पर उपकार आप करने जा रहे हैं? ये सब आपके अंग-प्रत्यंग में हैं और इसीलिए जब आप collective consciousness में आ जाते हैं तो आपको आश्चर्य होता है कि किसी की विशुद्धि चक्र में गर पकड़ है, गर कोई बीमार है तो आप भी पकड़ते हैं। आप कहते हैं माँ इसका विशुद्धि पकड़ रहा है, जल्दी छुड़ाओ। क्योंकि आप से रहा नहीं जाता। वो आपका अंग-प्रत्यंग बन जाता है, कहते हैं माँ देखो इसका पकड़ रहा है—मतलब आपका खुद पकड़ रहा है। देखिए आप कितने एकाकार हो जाते हैं। जैसे अब lecture की बात नहीं होती कि हों सब धर्म एक हैं। हिन्दु मुसलमान, पारसी, इसाई सब एक हैं, ये कहने की बात नहीं होती। ये होता ही है। कोई भी आदमी आपके सामने आए आप कहेंगे देखिए माँ इसका ये पकड़ रहा है। पकड़ आपकी उंगली रही है, आप कहते हैं इसका पकड़ रहा है। जैसे आपने अपनी उंगली ठीक कर ली, वो भी ठीक हो गए, आप भी ठीक हो गए। ये

बड़ी सूक्ष्म सी बात है। इसकी सूक्ष्मता को वो ही पकड़ सकता है जिसमें सूक्ष्म गति है। इसलिए जो आदमी ऐसे कहता है कि मैं संसार में बड़ा उपकारी हूँ, मैं बड़ी मिठाइयाँ बाँटता हूँ और मैंने लंगर खोल रखे हैं, वो महामूर्ख है और शूद्र है। किसी पर भी उपकार करने का मनुष्य को कोई अधिकार नहीं है। उपकार तो एक ही करता है, परमात्मा। वो भी अपने ही ऊपर उपकार कर रहा है किसी दूसरे पर नहीं। जब वो अपने से नाराज हो जाता है तो तहस-नहस कर देता है। जब वो अपने से प्रसन्न होता है तो सब ठीक-ठाक कर देता है और जब किसी पर उपकार करना होता है तो वो सारे संसार को उबार देता है। क्योंकि संसार भी परमात्मा ही है, विराट के अंग प्रत्यंग में सारा संसार है। जैसे समझ लीजिए जैसे ये light है परमात्मा की, और उसके सामने अगर विराट का चित्र है तो इससे जो चैतन्य बाहर आ रहा है उसी में सारा संसार है। अब गर इस विराट में कोई तकलीफ है तो वहाँ दिखाई देगी। गर वहाँ कोई तकलीफ है तो यहाँ दिखाई देगी। उसको ठीक किए बगैर विराट ठीक नहीं होने वाला, और न उन्हें आराम मिलने वाला है। ये मैं आपसे सच कहती हूँ। आपको आश्चर्य होगा एक बार मेरे पैर में लग गई चोट, तो हमारे साथ एक डॉक्टर थे तो उन्होंने कहा कि माताजी मैं आपको Vibration देती हूँ। मैंने कहा अच्छा, आओ बेटे दे दो Vibration। जैसे ही उन्होंने मेरे पैर पर हाथ रखा वहाँ से धड़-धड़ Vibration आने लगे। मतलब जब कहीं चोट लग जाती है तो वहाँ से double Vibration आने लगती हैं। जब मैं थक जाती हूँ तो तिमुने treble Vibration आने लगती हैं। जब मैं बीमार हो जाती हूँ तो वहाँ से ऐसे

Vibration आएगी जैसे आप सब लोग बीमार हों। समझ लीजिए बहुत से लोग दिल्ली शहर में बीमार हैं फ्लू से, तो मुझे भी फ्लू हो जाएगा और उसमें से जो Vibration निकलेंगी वो आपके फ्लू को ठीक करेंगी। वो जब निकल जाएंगे तो मैं भी ठीक हो जाऊंगी। अजीब सी चीज़ है ये! है ऐसी चीज़, यही होता है। ये बड़ी सूक्ष्म चीज़ है इसे आप समझें, इसे आप देखें और इसका साक्षात्कार करें। आपमें से ऐसे भी लोग हैं यहाँ जिन्होंने ये देखा है। ऐसा ही होता है। जैसे कि समझ लीजिए अन्दर में antibodies तैयार होती हैं और वो बहने लग जाती हैं। इसलिए हमारे सन्तुलन में जो हमने पहले ही से कहा है सबसे बड़ी चीज़ है कि हमें धर्म के तत्व समझ लेने चाहिए। सर्वधर्म समान हैं। बहुत ज़रूरी चीज़ है। कोई भी यहाँ पर कट्टर हो, उन्होंने बड़े बनाए, कट्टरपना के नमूने बना रखे हैं। हिन्दु धर्म में बड़ी अच्छाई एक ही है कि उन्होंने कोई एक मनुष्य जाति पर कोई लगाया नहीं कि ईसामसीह हैं या कोई मोहम्मद साहब ही हैं। ये एक अच्छाई हो गई, लेकिन उन्होंने सोचा कि भई जब इतने गए तो कोई दूसरा बनाओ, उन्होंने सोचा कि जितने ईसाई हैं वो पार हो गए या जितने मुसलमान हैं उनका ठीक हो गया तो अब उसका कैसे किया जाए? तो वो कहते हैं कि ठीक है, नहीं हो रहा तो दूसरा इलाज बनाएं। तो क्या इलाज उन्होंने बनाया, तो जाति पाति ही बना दी। आदमी ऐसा है, किसी चीज़ से बाज़ नहीं आता। ईसाई लोग कहेंगे कि बस ईसामसीह एक आए थे दुनिया में और कोई नहीं आए। तो ईसामसीह भी काफी उनके मुँह में बातें डाल दी। लेकिन ईसा मसीह ने खुद ही कहा था Those who are not against me are with

me। अब who are those? मोहम्मद साहब ने भी कहा है खूब कहा है, आप अगर पढ़ें उसको। बहुत से पैगम्बर आए। इन लोगों ने लगा दिया कि अब इनके बाद कोई पैगम्बर ही नहीं आएगा।

क्राइस्ट ने कहा है कि I am the light I am the path, तो कहा कि ठीक है He is the light He is the path but who is the destination? Who is the beginning? भई light, है path है उसकी और भी तो चीज़ है, आगा-पीछा भी है उसका। कृष्ण ने कहा सर्व धर्माणाम् परितज्य मामेकम शरणम ब्रज, तो लोग कहते हैं कि अब आप सब लोग हिन्दु हो जाइए। इसका मतलब ये है इतने जड़ हम लोग हैं। जिसने जो कहा उसको बड़ा ही जड़कर दिया। हर एक तत्व को जड़ करने में मनुष्य बहुत ही होशियार हो गया है। जितनी भी सूक्ष्मता है वो खोती गई है।

आपको कुण्डलिनी के बारे में मैंने कल सब चक्रों के बारे में बताया था। कुण्डलिनी क्या है, वो किस तरह से उठती है, कैसे चढ़ती है आदि। कुण्डलिनी सूक्ष्म शक्ति है। वास्तविक सदाशिव की शक्ति हमारे सिर पर सदा विराजमान रहती है और सदाशिव की शक्ति जो है यह ब्रह्मशक्ति है। अब सदाशिव कौन हैं उससे पहले की बात करें। तो ऐसा ही समझ लीजिए कि सदाशिव और शक्ति ये दोनों एक ही चीज़ हैं जैसे सूर्य और उसका प्रकाश। लेकिन creation जब करने का हुआ, अनेक बार हुआ creation, एक बार नहीं अनेक बार हुआ, तब तक सदाशिव और शक्ति अलग हट गए। दो अंग हो गए, शक्ति ये कार्य करती है, सदाशिव जो हैं वो साक्षी स्वरूप देखते हैं। शक्ति का कार्य है। शक्ति कार्यान्वित होती है। अब हम



शक्ति को समझते हैं, जैसे कि समझ लीजिए, आज यहाँ एक शक्ति आई है आपके सामने आप light देख रहे हैं। पर आप जानते हैं कि इसी light से आप गैस भी चला सकते हैं, इसी light से चाहे तो आप पंखा चला सकते हैं, इसी light से चाहे तो आप convert कर सकते हैं magnet में। पर आप उस शक्ति को नहीं समझ सकते जो शक्ति सारा कार्य करती है, सारा organize करती है, सब cooperation करती है, integrate करती है और जो प्यार करती है। आप कोई ऐसी शक्ति नहीं समझ सकते हैं जो प्यार करती है और प्यार में ही ये सारा कार्य है। प्यार से ही हरेक चीज़ जानती है और सारा कार्य करती है। ऐसी शक्ति आप नहीं समझ सकते। उसी शक्ति की मैं बात कर रही हूँ और वो शक्ति सारी ही शक्तियों का समूह है, उसी में electricity है, उसी में magnet है, उसी में light हैं, उसी में सारे elements हैं। अब आप यहाँ देखिए, ये जो हमने चित्र बनाया है विराट का, उसके सिर पर सदाशिव की शक्ति है और सदाशिव का पीठ भी है इसलिए उनकी वहाँ शक्ति है। इसके तीन अंग हो जाते हैं। आप देखिए ऊपर से, हमने बताया, वहाँ से जब छूटती है तो एक ऐसे आती है, एक ऐसे आती है, और एक बीच से आती है और एक जो सदाशिव स्वयं हैं, उनका असर हृदय में आता है। ये जो तीन शक्तियाँ हैं इनको महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली, तीन के नाम से कहा जाता है। अंग्रेजी में इस का कोई नाम नहीं है, मैं नहीं जानती अंग्रेजी में इसे क्या कहा जाता है। आप कहेंगे बहुत ही out of date चीज़ है। क्योंकि जो कुछ सनातन है वो अपने देश में out of date हो गया है और जो अंग्रेजों का है

वो सबसे out of best हो गया है। जब ये सहजयोग हमारा इंग्लैण्ड और अमरीका से यहाँ आएगा तो लोग समझेंगे। हम लोगों को सीधे समझ में बात नहीं आती। जब English लोग सहजयोग आपको, मेरे पर लिख ही रहे हैं दो आदमी, एक English लिख रहे हैं एक फ्रेंच लिख रहे हैं, जब चिट्ठियाँ ले के यहाँ आएंगे तब यहाँ के ladies और यहाँ के gentlemen जो हैं जो सिवाए tailcoat के बाकी सब अंग्रेज हैं, वो ladies and gentlemen, क्योंकि हिन्दुस्तानी यहाँ बहुत कम हैं। सभी वही लोग अभी तक हमारा guidance कर रहे हैं। इनका नाम महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी ऐसा है। लेकिन संस्कृत भाषा की विशेषता ये है कि एक-एक अक्षर मंत्र है। देवनागरी लिपि में एक-एक जो हम अक्षर—अ+क्षर, जो क्षर नहीं है, जितना हमने अ, आ, इ, ई जो कुछ है वो सारा ही कुण्डलिनी में घूमने वाला शब्द है। वहाँ वो शब्द निकलता है। मनन में हम लोगों ने इन शब्दों को सीखा है और तब लिखा है। अंग्रेज लोग कहते हैं, मगर जैसा बोलते हैं ऐसा हमने 'M' सीखा है। मगर फगर से हमारा कोई मतलब नहीं है। इन्होंने जानवरों से भाषा सीखी है, हमने मनुष्य के अन्दर बहने वाली कुण्डलिनी से भाषा सीखी है। जब कुण्डलिनी ऐसे घूमती है तो आवाज यूँ करती है, श, श, श, यहाँ पर। ठीक है न? हर जगह उसके अलग-अलग शब्द हैं जैसे यहाँ 'हँ' 'क्ष' दो शब्द आते हैं। होते हैं, वो जो हम जिसे ओम् करके लिखते हैं, अ जैसे जो लिखते हैं, जो आप जिसे लिपि में ओम् लिखते हैं वो यहाँ आप देख सकते हैं कि यहाँ पर ओम् ही रहता है। जब कुण्डलिनी जागृत होती है तो यहाँ जब उस पर light पड़ती है तो ये जो चक्र है यहाँ पर ओम् ऐसा



ही लिखा होता है जैसा आप लिखते हैं। और जो अ आ इ ई, जो भी लिखा है आप लिखते हैं। देवनागरी में, संस्कृत भाषा में, वो भी हमारे अन्दर जब कुण्डलिनी वहाँ पर आघात करती है, जिस वक्त उसके निनाद होते हैं, तब वो निनाद और उसका लिखना भी घटित होता है। कितनी बारीक चीज़ है? क्या आपकी संस्कृति है और कहाँ से आई है! जो सारी मननों से उतरी हुई है, कोई हमने बाहर से सीखी हुई, Artificial चीज़ें नहीं हैं। लेकिन संस्कृत भाषा तो हमारे यहाँ पण्डितों, मूर्खों और गधों की हो गई जिनको कि, उसका उच्चारण भी नहीं आता। जो उसके तत्व को नहीं समझते! ये सब अंग्रेज हैं, शैली और कीट्स पढ़ते हैं। ये भाषा हमारे अन्दर उत्पन्न होती है और लिखित होती है। एक-एक अक्षर लिखने में अर्थ होता है। ओम् कैसे बना? इस तरह से ओम् की रचना होती है, बिल्कुल ओम् ही लिखा है। मैं ऐसे अंगुली घुमा रही हूँ, आपका भी आज्ञा घूम रहा है। इतनी scientific चीज़ है क्योंकि इसका सम्बन्ध Reality से है। इससे बढ़कर और कौन सी चीज़ scientific हो सकती है? जब तक आप संस्कृत में श्लोक नहीं कहते मेरे चक्र चलते ही नहीं हैं, आश्चर्य की बात है! पर आप गर अंग्रेजी में कहें तो चलते हैं। सिर्फ आज्ञा चक्र पर ईसा-मसीह की जो उन्होंने अपनी लिखी है क्योंकि यहाँ ईसा-मसीह का स्थान है उस पर उनका जो हिब्रू में उन्होंने लिखा हुआ है Lord's Prayer, वो चलता है, पर इंगलिश में भी कहें तो चल जाता है। पर यहां पर तो भी क्षमा स्वरूपिणी, क्षमा ही शब्द कहना पड़ता है क्योंकि यहाँ 'क्ष' शब्द है इसलिए क्षमा कहना चाहिए। सब कहने पर भी क्षमा कहना पड़ता है। इतना हमारा

संस्कृत भाषा का, कितनी, इसकी बुनियादें देखिए, कितनी गहरी और कितनी सूक्ष्म है? तो यह तीन, जो मैंने बताया, महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी तीन शक्तियाँ हमारे अन्दर में हैं, इनको ही 'ऐं' 'री' 'हीं' ऐसे कहते हैं क्योंकि इनका निनाद 'क्लीं', ऐसा होता है। र ये energy का शब्द है, जैसे राधा। र माने energy, ध माने धारने वाली। राधा, कृष्ण का अर्थ मैंने आपसे बताया था कृषि से आता है। अब 'कृ' शब्द कृष्ण कहते साथ विशुद्धि चक्र एक दम असर कर जाता है। कृष्ण ही कहना पड़ेगा क्योंकि कृष्ण जो हैं इसका यहीं से सम्बन्ध है। विशुद्धि चक्र से ही सम्बन्ध है तो कृष्ण ही उनका नाम हो सकता है। कितनी Scientific चीज़ है, ये बताइए और कितनी सूक्ष्म चीज़ है? लेकिन सहजयोग हमारा प्रेम का मार्ग है और प्रेम में इतनी गहराई नहीं देखने की ज़रूरत। एक ही अक्षर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होए। ये हमारा सहजयोग है। कोई ज़रूरत नहीं आप बड़े पण्डित होइए, पढ़ि पढ़ि पण्डित मूर्ख भए, जो पण्डित यहाँ आए उनसे तो भगवान बचाए, कहने लगे कि साहब हमने गुरु ग्रंथ साहब सारा रटा हुआ हैं। मैंने कहा अच्छा क्या है? वो ही जो आप कहते हैं वो ही कहते हैं कि मन में ही खोजो। मैंने कहा तुमने तो रट रखा है न, तुने तो खोजा नहीं न? खोजो? खोजना चाहिए। उसी प्रकार हो गया कि मन्त्रं अमन्त्रं अक्षरं नास्ति, नास्ति मूलं अंशनम्, अयोग्यः पुरुषो नास्ति, योजकः सः दुर्लभम्। वैसे तो हरेक चीज़ में मन्त्र है परन्तु मन्त्र की योजना आनी चाहिए। तो कोई कोई भूत लोग यहाँ आए हैं राक्षस लोग वो 'ऐं' 'रीं' 'क्लीं' का आपको मन्त्र दे देंगे, ओम् बोलो, क्लीं बोलो। पूछो भई ये है क्या? कुछ नहीं बता पाएंगे। अच्छा बता

भी दिया थोड़ा बहुत, कहीं पढ़ा-बढ़ा होगा, अब आपका चक्र कौन सा पकड़ा हुआ है? आपको ऐं री प्लीं का उन्होंने मन्त्र दे दिया, कोई मन्त्र विद्या का बड़ा भारी शास्त्र है कि कौनसा आपका चक्र पकड़ा हुआ है? गर आपकी left side पकड़ी हुई है तो आपको Left Side का मन्त्र देना चाहिए और आपकी right side पकड़ी हुई है तो right side का देना चाहिए, बीच की पकड़ी हुई है तो बीच का देना चाहिए। अब ये जो तीन आपको यहाँ दिखाई दे रही हैं उसमें से left side महाकाली का स्थान है। ये हमारे तमोगुण को पालती है। तमोगुण हमारे अन्दर है। इसे चन्द्रनाडी भी कहते हैं।

अब देखिए कि पृथ्वी की रचना भगवती ने कैसे की? पहले सूर्य से कुछ हिस्सा भगवती ने निकाल लिया। उसके बाद उस हिस्से को बहुत दूर ले गई, सूर्य से बहुत दूर ले गई जिससे वो एक दम ठण्डा हो गया, बर्फ की तरह। फिर उसको धीरे-धीरे सूर्य के पास लाई। उससे वो पिघलने लग गया, उसमें पानी का प्रवाह शुरू हो गया। उसके बाद वो उसे फिर से बहुत दूर ले गई, फिर नजदीक लाकर ऐसा adjust कर दिया कि जिससे वहाँ सृष्टि हो सके, जिससे वहाँ जीव-धारणा हो सके, ये सारा ब्रह्माण्ड जो है Spiral में Move करता है Spiral में। मैं आपसे बता रही हूँ शायद सौ साल बाद लोग कहेंगे बहुत सी बातें जो अभी अभी हमने कही थीं वो भी अब लोग कहने लग गए हैं। उस Spiral के बराबर उस Spiral के Movement से ये होता है कि व्यक्ति कभी सूर्य की ओर ज्यादा होता है कभी चन्द्र की ओर ज्यादा होता है। तो सूर्य नाडी और चन्द्र नाडी हमारे अन्दर दो नाड़ियाँ हैं। Right side में जो नाडी है उसे सूर्य नाडी कहते हैं और

चन्द्र नाडी को जो कि हमारे अन्दर बसती है उसे ईडा नाडी कहते हैं। इसमें भी बड़े घोटाले हैं, मैं देखती हूँ कि इतना confusion है, इतना confusion है। Right side में जो नाडी है उसे पिंगला नाडी कहते हैं, right side की नाडी जो है सूर्य नाडी है, left side की नाडी जो है चन्द्र नाडी है। इन दोनों का जब संतुलन आप साधते हैं तब आप बीचों-बीच आते हैं। एक extreme में कोई गए तो पैण्डुलम जैसे एक जगह गए तो दूसरी जगह को जाना शुरू होता है। जैसे कि मैंने बताया था जहाँ रजोगुण बहुत ज्यादा हो गया है विदेशों में तो उन्होंने तमोगुण में आने की शुरुआत की। जब बहुत ज्यादा बढ़ गए तो suicide शुरू हो गए और नहीं तो शराब पीना, गांजा और इस तरह की चीजें जिससे balance आ जाए। एक पैण्डुलम झुका गया तो उधर से उधर दौड़ गया। उधर से उधर बीचों बीच संतुलन है, एकदम मध्य में और उसके बीच में Gap है, यहीं void है, इसे void कहते हैं। जैन system में अगर आप जैन पढ़ें तो पूरा सहजयोग है, कबीर पढ़ें तो पूरा सहजयोग है, नानक पढ़ें तो पूरा सहजयोग है, कृष्ण पढ़िये तो पूरा सहजयोग है, राम पढ़िए तो पूरा सहजयोग है। क्राइस्ट पढ़ें तो पूरा सहजयोग है, कुरान पढ़ें तो पूरा सहजयोग है। सब सहजयोग है। कहने का ढंग शायद अलग हो जाए पर मज़ा आएगा वही। ये जो बीच का void है, ये भवसागर है और इसमें उठने के लिए कोई सीढ़ी नहीं है समझ लीजिए कि दो ऐसी सीढ़ियाँ लगी हुई हैं लेकिन बीच वाली सीढ़ी आधी लटक रही है और उस पर चढ़ने का जो मार्ग है वो नीचे है कुण्डलिनी। इस कुण्डलिनी को, इस bridge को, इस gap को भरना होता है,



बहुत सीधा-सरल है, कोई बहुत दूर नहीं। अब ये कुण्डलिनी आपकी माँ है, जन्म-जन्म आपके साथ पैदा हुई, आप ही में स्थित रहती है। मृत्यु के बाद भी जीवात्मा के साथ ऊपर में आत्मा और कुण्डलिनी दोनों साथ ही साथ रहते हैं। ये हर समय आपमें स्थित रहती है और यही आपके पास subconscious का पूरा जोखा है। कुण्डलिनी जो है ये गौरी है यानि ये महाकाली का एक part है। महाकाली का एक part है। बीच की शक्ति जिसे हम सृजनात्मक शक्ति या उत्क्रान्ति की शक्ति कहते हैं या जिसे हम evolutionary शक्ति कहते हैं महालक्ष्मी की शक्ति कहते हैं, वो ये शक्ति नहीं है। ये आपके subconscious की शक्ति है जो अब तक आपको past हुआ, आपका कर्म हुआ, आपका ये हुआ, वो समझ-लेना चाहिए। तो कुण्डलिनी वो चीज़ है, उसका हिस्सा है। जो void है void के अन्दर में सरस्वती का कार्य है। क्योंकि मैंने आपसे बताया था बीच का जो नाभि चक्र है उसमें से एक कमल का फूल निकलकर के, उसमें बैठा हुआ ब्रह्मदेव सारी चीज़, रचनात्मक कार्य करता है। इसलिए इस void के अन्दर में रचनात्मक कार्य की शक्ति है। आप जानते हैं, ये है। ये रचनात्मक कार्य पाँच element के बारे में, उसी से मन भी तैयार होता है। मन भी इसी का एक हिस्सा है। Existence की शक्ति है और वो कार्यान्वित रहने की रचनात्मक शक्ति है। जब वो कार्य करती है तो इस तरह से, एक समझ लीजिए, कि byproduct होता है किसी factory में, किसी प्रकार के दो byproduct निकलते हैं, एक byproduct जो left side से ऊपर चलता है वो इस side में आ जाता है right side में। इसे

Super Ego कहते हैं और जो right side के कार्य करने से होता है वो Ego होता है। जो लोग right side में कार्य करते हैं, जिन्हें रजोगुणी कहते हैं वो ego-oriented होते हैं, अपने Ego से कार्य करते हैं। और जो left side होता है वो Super Ego होता है, बहुत से आपमें psychologist होंगे तो आपको समझा देंगे। जैसे कि एक बच्चा है माँ की गोद में दूध पी रहा है आराम से। आनन्द में है। उस वक्त उसकी माँ उसको हटाती है, तो उसका ego जागृत होता है, वो कहता है कि ये क्या कर दिया? माने उसको गुस्सा चढ़ता है। उसकी माँ उसको डाँटती है। ऐसा नहीं करना, super ego बनता है। कोई करने की इच्छा होना ego से होती है और जब उस पर दबाव आता है वो शक्ति super ego की होती है। हमारे अन्दर इस प्रकार दो संस्थाएँ बनती हैं Ego और Super Ego। एक चीज़ से तो हम कहते हैं इसको हम करके दिखाएंगे और दूसरी चीज़ से हम कहते हैं कि नहीं भई ये नहीं करो। ये हमारे बाप कह गए थे, इसमें फायदा नहीं होने वाला। अब जरूरी नहीं कि बाप अच्छा ही कह गए हैं, कभी अच्छा भी कहते हैं कभी कभी बुरा भी कह जाते हैं। इस तरह की दो शक्तियाँ हमारे अन्दर काम करती हैं या ऐसा समझ लीजिए कि एक से हमारी इच्छा शक्ति और दूसरी से हमारी रचना शक्ति। रचना शक्ति और इच्छा शक्ति ग़र बराबर आ जाए या जिसे कहिए ego और super ego जब बराबर आ जाए तो आप देख सकते हैं कि कुण्डलिनी का उठना कितना आसान हो जाएगा क्योंकि सर का बोझा जो है वो एक जैसा हो जाएगा बीच में से कुण्डलिनी आसानी से निकल जाएगी। इसीलिए संतुलन की बहुत जरूरत है।

आज मैं संतुलन पर ही बोल रही हूँ, बार बार गुणगान करके संतुलन पर आती हूँ। गर आपके अन्दर संतुलन नहीं है तो कुण्डलिनी जागृत होकर के ब्रह्मरन्ध्र से नहीं निकलती। संतुलन का establish होना बहुत जरूरी है। और उस संतुलन के लिए ही मैं आप लोगों से कहती हूँ कि आप left से right को जाएँ क्योंकि ego यहाँ पर बढ़ गया है। पूरा ego है। यहाँ का balloon ego ने दबा दिया है, super ego को नीचे। तो आपसे मैं कहती हूँ कि आप इस तरह से ऊपर उठाइए, super ego उठेगा और ego नीचे आ जाएगा। फिर आप उठाइए फिर आप करिए, धीरे-धीरे करते करते ये हो जाएगा कि बीचों बीच आ जाएगा। उसके लिए भी मेरे ओर हाथ करना पड़ेगा नहीं तो आपके हाथ से थोड़े ही कुछ होने वाला है। जैसे बीच में आ जाएगा तो कुण्डलिनी खट से उठकर ऊपर चली जाएगी। कुण्डलिनी सब जानती है, समझती है आपका सब। उसको Past मालूम है। आपने जो गलतियाँ करीं, जो कुछ भी आपने अपने साथ ज्यादातियाँ करीं, जैसे आप किसी गुरु के पास गए, कुण्डलिनी आपकी जानती है। उठेगी ही नहीं frozen कुण्डलिनी। इसीलिए आपने देखा होगा कि किसी ने बताया मेरे गुरु थे तो मैं सर पकड़ कर बैठ जाती हूँ कि गई कुण्डलिनी काम से, अब तो हाथ जोड़ो इनको भैया। क्या करें? अब लोगों को ये लगता है कि माताजी क्यों गुरुओं को बुरा कहते हैं? क्योंकि कुण्डलिनी ही उन्होंने freeze कर दी तुम्हारी तो मैं क्या करूंगी? और दूसरा ये है कि आपका क्या होगा? कितना सर्वनाश है? आप ही सोचो कि आपका कोई उद्धार नहीं, आप पार नहीं कर सकते, जन्म जन्मांतर तक भी नहीं

हो सकते। और ये कहने पर भी लोग कहते हैं, नहीं हमारे गुरु बहुत अच्छे हैं। तो सोचते हैं क्या? एकदम भूत-बाधा है, क्या? कितना भी कोई परेशान करे, कुछ भी तकलीफें हों, सारा शरीर भी टूट जाए, Heart से भी मर जाएँ, तो भी माँ, हमारे गुरु बड़े अच्छे हैं। इसका कारण क्या है? इसका कारण एक ही सीधा सरल बैठता है कि कोई न कोई आपके ऊपर पकड़ है। आप सोचना ही नहीं चाहते कि असलियत क्या है? अब ego किसी आदमी का बहुत जबरदस्त बढ़ा हुआ है, उसके अनेक तरीके हैं आपसे मैंने पहले ही बताया है। Ego की बीमारी ऐसी है कि वो बीमारी पता ही नहीं चलती है। गर आपका तमोगुण super ego ज्यादा है, तो उसका बदन टूटेगा, कि माँ मेरा यहाँ दुखता है, मेरे पैर पकड़ गए, पता नहीं कोई कभी मेरे गर्दन में बैठ गया है, पता चलता है। पर ego तो अपने को ही अपने ऊपर बिठाया होता है, घोड़े पर चलता है। उसके पास आप जाइए तो मेरे को ही lecture देना शुरू कर देता है। अभी गई थी मैं कोई मंत्रियों के पास में, उन्होंने मेरे को ही lecture देना शुरू कर दिया, इधर आप लोगों का कोई programme होने वाला था, उसी में मैं lecture सुनती रही, मैंने कहा वाह भई वाह! रोज़ lecture देते हैं अभी इन्हें मैं ही चाहिए थी lecture सुनाने के लिए? अच्छा भई सुना लो। तुम्हारा भी हो जाएगा, इधर तुम लोग यहाँ बैठे रह गए मैं वहाँ ही बैठे रह गई। इसलिए ego ऐसी चीज़ है जिसको अहंकार एक बार चढ़ जाए उसको समझाना बहुत मुश्किल होता है। सूक्ष्म अहंकार भी बहुत होता है, जैसे किसी ने कुछ पढ़ लिख लिया तो मेरा तो इसमें विश्वास ही नहीं कि माताजी कुण्डलिनी उठाती है। अब साहब



आपका विश्वास ही नहीं रहा। मैं तो विश्वास ही नहीं कर सकता, आपका विश्वास किसी चीज पर है? आपने क्या जाना, आपने क्या देखा? आप आइए देखिए। आपका विश्वास नहीं है या है इससे क्या फर्क पड़ने वाला है भगवान को? मुझे पूर्ण विश्वास भगवान पर है, माने आप कहीं के अफलातून हो गए? सृष्टि क्या अपने बनाई थी, या आपके बाप ने बनाई थी? इस पेड़ के नीचे जो बैठे हुए हो क्या आपने बनाया? पूर्ण विश्वास परमात्मा पर है, इस तरह से जो मनुष्य बातें करता है वो अति है। जिसने सारी सृष्टि की रचना की, जिसने सारा संसार बनाया, आपको और आपके बच्चों को बनाया, जो चीज संसार में जगमगा रही है, ये सब जिसकी कृपा दृष्टि से हो रहा है उस पर आप विश्वास कर रहे हैं, बहुत आप उपकार करते हैं! परमात्मा पर आपका विश्वास ही नहीं है तो आपसे बढ़कर अक्लमंद कौन होगा? ये सब पागलों जैसी बातें हैं। मैं जब पैदा हुई तो मेरे को लगा कि मैं कौन से पागलखाने में आ गई? फिर ये कि हाँ मैं तो सब कुछ जानता हूँ माताजी, हाँ मैंने पढ़ा था, सारी माँ ये किताब पढ़ के आया हूँ उसमें। अब किताब कहीं भी, किसी भी छापे खाने में आप छपा दीजिए, छप जाती है। कोई भी छाप सकता है, जिसका मन हो छाप दे और भगवान के ऊपर कोई छापे तो उसके लिए कोई नियम नहीं है। कोई कायदा कानून नहीं कि कोई उसको पकड़े कि भई तूने इसको क्यों छपा? और कोई कहे कि भगवान का ये हाल है तो हाँ भई है। वो कहे कि भगवान का वो हाल है तो है। उसका कोई ऐसा कहीं कायदा है, कोई कानून है जहाँ आदमी हाथ पकड़े कि खबरदार भगवान पर बोलने वाले तुम कौन होते हो? हिटलर

से लेकर के नेपोलियन से लेकर के सबने भगवान पर भाषण झाड़े, किसी ने छोड़े थोड़े ही। सब अपने को सोचते हैं कि उनको अधिकार है भगवान पर lecture देने का। इनसे पूछिए, तुमको क्या मालूम है भगवान के बारे में, तुम क्यों बोलते हो? मैंने इतनी किताबें लिख डालीं, मैंने फलाना पढ़ डाला, ढिकाना, मैं अमरीका गया था, मैंने इतने lecture दिए, मैंने इतने lecture पढ़ डाले, एक एक एक एक इस तरह से एक तरह का बड़ा सूक्ष्म aggression है। आप इसको समझ नहीं पाए। ये मनुष्य के Intellect पर एक aggression है, आपको mental feast देते हैं। भगवान की बातें करने लगे, बातें सुनने लगे आप, बड़े अच्छे बोलते हैं साहब। एक साहब हैं क्या भाषण देते हैं, बस सुनते ही रहिए आप पता ही नहीं चलता है time का! अच्छा मनोरंजन हो रहा है। भगवान पे बोलने का हरेक को अधिकार नहीं, गीता पर बोलने का तो किसी को अधिकार नहीं, गीता के lecture होते हैं! माताजी मैं गीता के lecture में ज़रा जाता हूँ और आपका आज्ञा चक्र पकड़ा हुआ है। तो मैं गीता के lecture में नहीं जाऊँ? बेटा तुमको जो गीता समझा रहा है क्या वो पार है? पार हुए बगैर आपको धर्म पर बोलने का या गीता पर बोलने का कोई अधिकार नहीं। जो मनुष्य पार हुए बगैर कोई सा भी lecture देता है वो ऐसा ही जैसे एक अंधा आदमी आपको रास्ता बता रहा है। लेकिन धर्म में अन्धा कौन है, और देखता कौन है ये जानने का भी कोई मार्ग नहीं। जो आदमी विरह में बोलता है उसका तो सुनना भी नहीं चाहिए। विरह के गीत गाए उसको क्या सुनना? हम भी विरह में हैं, वो भी विरह में है, इसलिए मज़ा आता है। जैसे सूरदास

जी हैं, सूरदास जी विरह में रोते थे तो सबको अच्छा लगता है। ये भी अन्धे, हम भी अन्धे, सब अन्धे गा रहे हैं! बल्लभाचार्य जी के पास गए, बल्लभाचार्य कहने लगे काहे धिधियावत हो भाई? जो आदमी मिलन में बैठता है उसको समझ ही नहीं आता कि विरह की बात क्यों गा रहे हो। सबको अच्छा लगता है ऐसा भजन कि भगवान कब मिलेंगे? किसी किसी को ऐसा बेकार का झूठा नाटक भी अच्छा लगता है। बड़ी विरह अवस्था में सब देवदास बने बैठे हैं। देवदास काटे घास, मैं ये कहती हूँ। इतनी कविता रुदन की और इतना विरह। हे भगवान! इनको कब बुद्धि आएगी? विरह का मज़ा बड़ा आता है आदमी को। इसके काव्य होते हैं लेकिन जो मिला हुआ है, मिलन में बैठा है, वो विरह के गीत कैसे गाएगा? एक सीधा हिसाब होता है, जो मिलन में बैठा है वो विरह की बात कैसे कहेगा? वो कहेगा I am the light, I am the path, वो कहेगा कि सर्व धर्माणाम परित्यज्य मामेकम् शरणम् ब्रज। उसके अन्दर authority होगी। वो किसी के बाप से डरने वाला नहीं, किसी के सामने धिधियाने वाला नहीं। आना हो तो आओ नहीं तो जाओ। उसकी पहचान कबीर है उसका सबने मज़ाक उड़ाया सिधुक्कड़ी भाषा करते हैं! हमारे यहाँ हिन्दी भाषी लोग उसका बड़ा मज़ाक बनाते हैं। उनके पांव के धूल के बराबर भी इनमें से कोई हो तो मुझे बता दीजिए। मार्कण्डेय जी के पीछे पड़ गए। उनमें ये ये दोष है, उनके वाङ्मय में ये दोष है। तो इनके लिए उमरखैय्याम बहुत अच्छे हैं क्योंकि वो पिनक में अपने लिखते रहते हैं। ये लोग सब पिनक में ही लिखते हैं, अधिकतर गज़लें जो हैं वो मैंने देखा है कि पिनक में ही लिखी हुई हैं।

मुझे तो घिन चढ़ जाती है जिस तरह से विरह में लोग रोने लग जाते हैं गज़लों में बैठकर। ये कोई मदद की लोगों की बात नहीं। ये सब तमोगुण के लक्षण हैं। हर समय विरह गाना, रोते रहना, विरह की बात करना। मिलन की बात करो, मिलन में आओ और जब समय आ गया तो हमें विश्वास ही नहीं कि मिलन भी हो सकता है। तो रोते बैठेंगे। पहले कहेंगे कि आओ, आओ आओ, जब आकर खड़े हुए तो कहते हैं हमें विश्वास ही नहीं होता कि वो सच्चा है! ये दुनिया है इसे क्या कहा जाए? अरे पहले बुलाया क्यों, जब बुलाया है, जब आ गए तो बोलते हैं कि हमें विश्वास ही नहीं होता है कि आप आ गए! अभी हमें रोने दीजिए, अभी रोने से फुर्सत नहीं उनको। जब इनका रोना खत्म होगा तब तक यहाँ से पसार भी हो जाएगा। घण्टों बजाते रहेंगे और पुकारते रहेंगे कि प्रभु तुम आओ, प्रभु तुम आओ दर्शन दो, दर्शन दो हमको, दर्शन दो और दर्शन लेकर करने का क्या है? कुछ बनना चाहिए, होना चाहिए, घटित होना चाहिए। ये तो होने की बात है, Becoming की बात है, हवाई बातें नहीं। लेकिन मनुष्य बड़ा संतोष में रहता है क्योंकि वो superficial है न। उसको इसी में संतोष रहता है कि कोई इनको रिझाए रखे। बैठे अपने भजन गा रहे हैं, घण्टों गा रहे हैं, घटही खोजो भाई, घटही खोजो भाई, घटही खोजो भाई। घटही खोजो भाई, खोजने वाले कौन हैं? किसको lecture दे रहे हो भाई? वो तो उन्होंने बताया जो खोज चुके, अब तुम किसको lecture दे रहे हो? वो तो उनको बताया था कि तुम घट को खोजो। उनसे कहा था कि सरदर्द की ये दवा ले लेना, अब तुम prescription ही रट रहे हो सुबह से शाम तक! इससे क्या लाभ



होने वाला है? इससे किसका भला हुआ है? ऐसे भजन गाने से एक भी आदमी को आपने देखा है कि लाभ हुआ? अन्त में वही सिर पैर ऊपर करके नाटक करके चिल्ला रहे हैं सुबह से शाम तक। Cancer of the Throat हो जाएगा। अब समय ये आ गया है कि ऐसी बेकूफियाँ ज्यादा न करो, नहीं तो Throat Cancer हो जाएगा। बेकार में गाते फिरेंगे तो Cancer of the Throat हो जाएगा। किसने कहा इतने द्राविड़ी प्राणायाम करने के लिए? कि गला फाड़ फाड़ कर गाओ? अरे भई एक बार जब कह दिया हो गया, आ जाओ, आ ही जाएंगे, इतना गला फाड़ने की और अपना विशुद्धि चक्र इतना सत्यानाश करने की क्या ज़रूरत पड़ी हुई है? मेरी समझ में नहीं आता। यहाँ पर आए, माताजी हम ये मंत्र कहते थे। कितने बार? रोज़ का कम से कम हो जाता था 108 बार। भई किसने कहा 108 बार कहने के लिए? एक बार कह दिया हाथ जोड़ के, श्री राम तुम्हारे शरणागत हैं बस हो गया। अब वो कोई आपका नौकर है जो आप सुबह से शाम तक आप उसको Order दे रहे हैं? अब पूरा समय आप किसी को इस तरह करें तो भगवान वहाँ से उठ ही जाएंगे। साहब सिर दर्द हो जाता है मुझे। अब तीन से चौथी बार कोई माताजी कहते हैं तो मैं कहती हूँ भई क्या चाहिए आपको? आप ही सोचिए भगवान की position में जाकर, क्या आपको कोई 108 मर्तबा पूरा समय पुकारता रहे तो कहेंगे भई चुप भी कर। हमारी grand daughter थी हम गए थे वहाँ बिहार में, Realized Soul है, बड़ी मज़ेदार जीव है। होगी कोई पाँच छः साल की, कहने लगी नानी बस यहाँ तो बहुत गड़ बड़ हो गया, मन्दिर में ये सब लोग रात-दिन गाते

रहते हैं, हे राम, हे राम तो वहाँ से भगवान जी तो कबके भाग गए, ये तो मुझे पता है लेकिन अब मैं भी भाग जाऊंगी। कहने लगी कि इन्हें सुन-सुन के तो मेरे कान दुख गए, अब तुम भी भाग जाना यहाँ से। ऐसे बेकार लोग हैं। एक छोटा सा बच्चा समझता है। वो गए थे लद्दाख उनके पिताजी तो वहाँ एक लामा साहब बैठे हुए थे। देखिए एक छोटा सा बच्चा छः साल का, अब सब लोग जाकर, सब लोग जा-जाकर लामा साहब के पैर छू रहे थे। अब ये तो पार हैं, इनको मालूम है कौन पार है, देखा उनकी Mother ने भी पैर छुए, पिता ने भी पैर छुए, तो उससे रहा नहीं गया। फिर वो ही शान आ गई उनकी। सामने जाकर उनके खड़ी हो गई, कहने लगी ये क्या सिर मुंडा के, चोगा पहन के सबसे पैर छुआ रहे हो? पार तो हो नहीं। सबकी हालत खराब, माँ बाप की। ये क्या कर दिया बच्चे ने? ठीक तो कह रही हूँ, ये क्यों पैर छुआ रहा है? तुम लोग इनके पैर क्यों छूते हो? ये तो पार नहीं है बिल्कुल भी। इन्होंने सिर्फ सिर मुंडा लिए हैं और चोगा पहन लिया है और ऐसा मुँह बना कर बैठे हैं। उनको ऐसा मुँह भी दिखा दिया। उनको किसी का डर नहीं। सरमुंडाने से अगर भगवान मिलते हैं तो जो ये भेड़-बकरियाँ होती हैं ये पहले भगवान के पास पहुँचती। कबीर का Sense of humour जो था वो कमाल का था। और ये रोने की हद इतनी पहुँच गई है इन लोगों की कि अब वो हसन हुसैन मर गए तो उसके लिए चिल्ला रहे हैं। एक आफत मचाए हुए हैं, साहब ऐसी रोनी सूरत देख के जी घबराता है। कोई आने वाला हो भगवान तो वो भी भाग जाए। ये कहाँ रोने पीटने वाले लोग? इतने तो जानवर भी नहीं रोते, कोई नहीं रोता इतना। ये तो



मनुष्य का एक अजीब तरीका है, रोने लग गए तो रोने ही लग जाए। अच्छा वो हुआ, उससे भी जब चैन नहीं आया तो जिस दिन भगवान का जन्म होगा उसी दिन उपवास करेंगे। इससे बढ़कर और किसी का क्या अपमान करेंगे। इससे बढ़कर और किसी का क्या अपमान होगा? आप समझ लीजिए आपके घर में कोई आदमी आया, कहने लगा मैं तो आज खाना नहीं खा रहा हूँ। वो कहेगा भई मैं जा रहा हूँ अपने घर। गर किसी आदमी को आपको भगाना हो घर से तो आप कह दें 'मैं आज खाना नहीं खा रहा हूँ।' उसने कहा अच्छा मैं जाता हूँ होटल, सीधा हिसाब। आपके घर में कृष्ण का जन्म हुआ राम का जन्म हुआ तो भी उपवास करो। ये कौन सा तरीका है? इससे बढ़कर अपमान का और कौन सा तरीका है? कल मैं आपके घर में आऊँ, समझ लीजिए श्रीमाताजी आपके घर में आते हैं, मेरा तो उपवास है, तो भैया मेरे को काहे को बुलाया? जब कोई ऐसे आते हैं, ऐसे जन्म होते हैं बड़े तो उस वक्त जश्न मनाना चाहिए, खुशियाँ मनानी चाहिए, सबको खाना खिलाना चाहिए। गणेश जी को मोदक पसंद हैं तो मोदक बाँटिए। उस दिन उपवास करेंगे! और जिस दिन नरक चतुर्दशी है, उस दिन सवेरे चार बजे उठकर नहा करके खाने को बैठेंगे। बताइए सब उल्टी चीज़ें समझ में नहीं आती। ये किसने सिखाई? ये ब्राह्मणों ने बेवकूफ बनाया है या तो ये राक्षसों के धंधे हैं। मेरी तो ये समझ में नहीं आता है कि ये उल्टी बातें कहाँ से आ गई अपने यू.पी. में? और North में तो और भी चौपट हाल है, इतना चौपट हाल है कि कोई पढ़ा लिखा तो है नहीं यहाँ संस्कृत वंस्कृत। किसी को समझ तो है नहीं, जो

भी ब्राह्मण कहे चढ़ा दो, चलो ठीक है जितनी श्रद्धा हो ब्राह्मण को दे दो। ब्राह्मणों की तो यहाँ agency हुई। सबसे तो कमाल ये है कि जब मेरी शादी हुई, जब मेरी शादी हुई यू.पी. में तो हम घर पर गए, तो आपको आश्चर्य होगा, कि शादी में श्राद्धयोग गा रहे थे! वही मंत्र गा रहे थे! मारे हँसी के मेरी तो हालत खराब और पेट में बल पड़ गया। अब जाऊँ तो जाऊँ कहाँ? मैं घर की बहू, नई नई, मारे हँसते हँसते मैंने कहा भई मुझे तो नींद आ रही है। तो उन्होंने कहा इतने शुभ मुहूर्त पर तुम कहाँ सोने जा रही हो? मैंने कहा मैं करूँ क्या? क्यों हँसी आ रही है? मैं उनको कहूँ तो कहूँ कैसे कि सब उनको थोड़े बहुत वही पितृ पक्ष के थोड़े बहुत मन्त्र मालूम थे, वही बोले जा रहे हैं। मैं कहूँ कि ये क्या तमाशा है कि इनको तो कोई श्लोक भी मालूम नहीं? ब्राह्मण हैं और हमारे घर में खानदानी चले आ रहे हैं? तो मैंने कहा इनसे कौन बात करे अब? इन्होंने खानदानी ऐसे ही शादियाँ लगाई होंगी, उनको बरतन भी मिले हुए हैं, उनको गैया भी मिल जाती है। तो उनके घर में गैया ही गैया हो गई हैं और इस तरह के धर्म की चीज़ें बनी हैं इस तरह से rituals बने हैं! हम लोग क्या सोचते हैं कि पीछा छुड़ाओ। श्राद्ध हुआ तो उसने कहा कि भई देखो एक गैया देना और एक कपड़ा देना हमें और एक हमारी ब्राह्मणी को साड़ी दे दो, तुम्हारी माँ पहनेगी। आपने सोचा, ठीक है इससे पीछा छुड़ाओ, गैया तो बहुत मुश्किल है इसे साड़ी ही दे दो। कोई ये नहीं सोचता है कि हम जो कर रहे हैं उसमें हमारा क्या हृदय है? क्या करना है, क्या देना है, धर्म में क्या चीज़ है उसको जानना चाहिए। किस तरह की बात है? कोई इस तरह से बात को सोचता नहीं है



और इसीलिए ये हमारे अन्दर उसका संतुलन नहीं बैठता। बस काम चालू, काम चालू, चलते रहो, चलाते रहो किसी तरह से। कोई हाँ हाँ भई कैसे हो अच्छे हो, बैठो, हाँ ठीक ठीक है। उसके बाद वो गए, मालूम पड़ा बड़ा बदमाश है ये। इसने फलाने के घर चोरी की थी, उसने इतना रुपया मारा था। फिर आए अच्छा पान खा लो भाई। रात-दिन मनुष्य इसी तरह Superficially रहता रहेगा तो गहराई उसके अन्दर उतरती नहीं है, और इसीलिए कुण्डलिनी जागृत होती नहीं है धर्म के मामले में भी नहीं, search के मामले में भी। परमात्मा को खोजने के मामले में भी। जैसे अमेरिका में गुरु Shopping होता है वैसे यहाँ भी गुरु Shopping होता है। नहीं मैं सिर्फ गया था, मैंने देखा, मैंने चरण छुए, दर्शन हुए, प्रसाद मांगा, दर्शन करने गया था मैं तो वहाँ पर। वो दर्शन मैं उन्होंने आपके अन्दर में भूल रख दिए होंगे? मैं तो दर्शन के लिए गया था। पर ये कुण्डलिनी तो उठ नहीं रही बाबा, मैं क्या करूँ? उनको क्या? ये तो बड़ी गहरी सूक्ष्म चीज़ है कुण्डलिनी का उठाना और कुण्डलिनी का ऊपर चढ़ना भी अति सूक्ष्म चीज़ है। गर आपने इसकी संभाल नहीं करी, गर आपने अपना विचार इतना सूक्ष्म नहीं रखा तो चीज़ तो दब गई न। अब भी पार होने के बाद भी आप देखिएगा कि आपके Vibrations खो जाएंगे, ये तो है ही बात आपको बता दें। लोग कहते हैं माताजी दीजिए, तो Permanent दीजिए, क्यों साहब आपने मुझे क्या Permanent दिया है? मैं आपको क्यों दूँ Permanent? मैं तो नहीं देने वाली, मैं तो महामाया हूँ। सीधा हिसाब। आप Permanent पर बैठिए तो मैं भी Permanent दूंगी और आप ऐसे

कि आये यहाँ, जैसे वो ये कि Nescafe फट से काफी बन गई, वैसे मैं आप कुण्डलिनी तो जागृत करती है, वो तो मैं करती हूँ। जेट कुण्डलिनी का Set जरूर करती हूँ पर खींचती भी वैसे ही हूँ। है ना सही बात? आप खो भी देते हैं अपनी Vibrations को इसके बारे में जैन System में लिखा हुआ है उसको सपोरी कहते हैं कि आदमी जैसा कोई बॉल के जैसा होता है, ऊपर जाता है नीचे आता है, ऐसे ही डोंवा डोल चलता है। ये, वो होता है। इसलिए अपने चक्रों को संभालना पड़ता है। अपने को गहराई में उतरना पड़ता है, अपना जीवन गहरा बनाना पड़ता है, अब आप पूरा अपना जीवन जो है फालतू चीज़ों में बर्बाद करेंगे सुबह से शाम तक। अब करना ही पड़ता है, क्या करें, दुनिया ऐसी है, उसके लिए करना पड़ता है और आपके पास समय भी नहीं कि अपने में गहराई उतराए और परमात्मा के साम्राज्य में बैठे रहें। तो ठीक है आप जिस चीज़ की चाहत करेंगे वही होगा, आप जो करना चाहेंगे वही होगा। अपना समय ऐसे ही बर्बाद आप कर लीजिए ऐसे ही आपने हजारों जिन्दिगयों काटीं, और एक कट जाएगी, लेकिन ये वाली ज़रा मुश्किल रहेगा मामला क्योंकि फिर पता होगा बड़ी गलती कर गए, सत्य को मना करते करते जो Real सत्य आ गया उसको भी मना कर गए। वो तो देखना तो चाहिए न, समझना तो चाहिए। उसको पाने के बाद जो आदमी खो देता है तब तो समझना चाहिए कि उनके लिए ये व्यर्थ ही हुआ।

दिल्ली शहर की ये History है, ये कहना चाहिए कि हर समय काफी लोग पार हो जाते हैं पर जमते नहीं। जमने वाले बहुत ही कम लोग होते हैं। हर कार्यक्रम के बाद एक दो आदमी बच जाते



हैं। इस प्रकार तीन चार साल से हम आ रहे हैं, कुल मिला करके गर आप देखिए तो जो रोज के आने वाले आदमी हैं, जो उतरे हैं, जो कुण्डलिनी को मास्टर कर चुके, ज्यादा से ज्यादा दस या बारह लोग हैं, बस। बड़ी दुख की बात है। इसलिए आपसे, आज आखिरी दिन है, माँ के नाते मैं विनती करती हूँ और शक्ति के नाते आगाह करती हूँ कि अपनी गहराई को पाइए। अपनी गहराइयों में उतरिए। अपने समय को इस महान शक्ति के लिए रखिए। इसमें आप पाइए और दूसरों को दीजिए। बहुत बड़ा कार्य करने का है। गर हम किसी से कहते हैं कि मुम्बई शहर में और सब शहरों में मिलाकर कोई बारह, दस हजार आदमी हैं, अरे क्या हुआ, दस हजार आदमी हैं तो क्या हुआ?

सच बात है। बहुत लोगों को होने का समय आ गया है और ये है ही ऐसी चीज़ कि इतिहास की दृष्टि से ही वो समय आ गया था कि जहाँ बहुत लोग उसे पाएं। हालांकि बहुत से Realized Souls हैं जिन्होंने जन्म लिया है। बहुत से Realized बच्चे पैदा हुए हैं। दस साल के अन्दर वो तैयार हो जाएंगे। इसमें कोई शंका नहीं है। स्टाइलर जैसे आदमी ने इंग्लैण्ड में लिखा है कि अब दो समय दूर नहीं कि बहुत से Realized Soul इस संसार में जन्म लेंगे। ये कलियुग का मामला है, कलियुग में दो ही तरह के आदमी जन्म ले सकते हैं। एक तो कीड़े मकोड़े मच्छर लेंगे जो कि हर हालत में ऐसी दुर्दशा में रह सकें और ऐसे गन्दे atmosphere में रह सकें। इसलिए Population भी बढ़ता है।



जितनी देश में गंदगी और दुर्दशा आती है उतना ही Population बढ़ता है। जैसे गरीबी आ गई, गरीबी तो leprosy है, समझ लीजिए, गरीबी से घबराना चाहिए। ये आदमी गर अपने गरीबी को लेकर आए कि साहब मैं गरीब हूँ, मुझे दीजिए, तो उसे दो झापड़ दीजिए। गर आदमी कोशिश करे तो उसको ऐसे लानत वानत जैसे करने ज़रूरत नहीं, बस कोशिश की बात है। इस तरह से हम सोचते हैं कि हम गरीबों के लिए क्या कर सकते हैं। बहुत कुछ कर सकते हैं। किसी आदमी को आप गरीब देखें तो उसकी आप मदद करे उसको ऊपर उठाने की कोशिश करें। हरेक गरीब आदमी को उठाने की कोशिश करें, आपका कर्तव्य होता है। जिस तरह से भी हो सकता है उसकी मदद करें, उसे बताएं किस तरह से वो अपना जीवन निर्वाह करे। बहुत ही ज्यादा पैसे की ज़रूरत नहीं। ज्यादा पैसा हो गया तो उसके पैर निकलेंगे। जो आदमी शराब पीने लग गया तो अब उसको कहना अब तेरे को पैसा ज्यादा करने की ज़रूरत नहीं। जिसने सिगरेट पी उससे भी कह सकते हैं कि बस काफी है, जिसने बीड़ी पी उससे कहना अब काफी है। अब तू गरीब नहीं। फिर जो जुआ खेलता है तो वो कभी भी गरीब नहीं। इतना हो कि बस उसका खाना पीना चले, उसमें कोई विषय-वासना नहीं आए। सो ऐसी जगह ही कीड़े मकोड़े पैदा होते हैं और इसीलिए Population बढ़ता है। जैसे ही वातावरण अच्छा हो जाता है, आप जानते हैं कि जहाँ बुरादा होता है जहाँ गंदगी होती है, वहीं मच्छर पनपते हैं। जैसे ही सफाई हो जाती है वहाँ एक ही दो फूल खिलते हैं। इसीलिए बहुत ज़रूरी है कि हम लोग इस वातावरण को

शुद्ध करें और इस वातावरण को शुद्ध करने के लिए ज़रूरी है कि आप लोग इस शक्ति को वहन करें, पहली मर्तबा अब मानव अपने व्यक्तित्व से या अपनी शक्ति से ये जो पाँच तत्व हैं उसमें शक्ति डाल सकता है। इसके बहुत सारे Experiment किए हैं। हमारे Scientist लोगों ने बताया किस तरह से हम शक्ति दे सकते हैं इन पाँच तत्वों को। किस तरह से हम हमारी खेती बढ़ा सकते हैं। ये लोग Agriculturist हैं Agricultural University राहुरी में बड़े बड़े Scientist हैं, आप उनको चिट्ठी लिखकर पूछ सकते हैं, उन लोगों ने जब Vibrated पानी दिया तो 2/3, दो तिहाई फसल उनकी ज्यादा आई और फूल बड़े आए। और हमने जो वहाँ की चीज़ें देखी तो बड़ा आश्चर्य लगा हमें कि कुछ फल ऐसे कि ऐसे तो फल हमने कभी देखे नहीं थे। उनके रंग, उनका तेज, उनका आकार प्रकार एक अजीब तरह की चीज़ थी। इन्हीं चैतन्य की लहरियों से आप लोगों की बीमारियाँ मुफ्त में ठीक कर सकते हैं। आधा प्रश्न तो आपका ठीक हो गया, Health Ministry बन्द करा सकते हैं। आप का पैसा बचा, डॉक्टरों के जेब आप कुछ कम भरेंगे, डॉक्टर लोग इसी से मुझसे घबराते हैं। इसी से बुलाया नहीं। लेकिन ऐसी सब बीमारियाँ थोड़ी सहजयोग से ठीक होने वाली हैं। लेकिन दुनिया बीमार रहे ऐसी कोई इच्छा डॉक्टर भी नहीं करता होगा। मुफ्त में, अब जो लोग हमारे सहजयोग में आते हैं अधिकतर लोग वो डॉक्टरों के पास नहीं जाते। दवाईयों के खर्चे कम हो गए, डॉक्टरों के खर्चे कम हो गए, नींद की गोलियाँ लेने की ज़रूरत नहीं, आप आराम से पड़कर सोइए। बहुत सारी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं, कुछ नहीं होती,

अधिकतर बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं कुछ नहीं होती, अधिकतर बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं। आपमें संतुलन आ जाता है, आप आनन्द में आ जाते हैं। शराब सिगरेट और जुआ बाज़ी, औरतों के चक्कर सब छूट जाते हैं। हमारे यहाँ कुछ हिप्पी लोग आए, थोड़े दिनों में देखा उनके पास बड़े अच्छे रेडियोग्राम, ये वो। मैंने कहा ये कहाँ से आए? कहने लगे अब तो हमारे यहाँ पैसे ही पैसे बरस रहे हैं। मैंने कहा 'कैसे'? कहने लगे अब हम गांजा नहीं पीते हैं, L.S.D. नहीं पीते, उसमें तो बहुत पैसा लगता है, अब हम शराब नहीं पीते। कहने लगे अब हम कहीं कैबरे में भी नहीं जाते, डॉस में नहीं जाते, बस इसी में मज़ा आता है। सब भारतीय रिकार्ड ले लेकर के बजाते रहते हैं। अब आप सोचिए। घर में उनके शोभा आ गई, रौनक आ गई, सब आनन्द से, सब लोग रह रहे हैं, मियां बीबी के झगड़े छूट गए, दूसरों की बीबियों के साथ भागते नहीं अपनी बीबी को प्यार करते हैं, और बीबी भी ठिकाने से आ गई। सब आराम हो गया, व्यवस्था हो गई, सब राम राज्य आ गया। उसमें खर्चे बड़े कम हो जाते हैं। एकदम खर्चे कम हो जाते हैं। मनुष्य मौके पर पहुँचता है। जो कुछ उसका जितना है Vibrations से देखता है। जो आदमी Vibrations में जीता है वो बहुत बड़ा संग्रह नहीं कर पाता। ज्यादा उसके पास चीज़ हो जाती है तो वह बाँटना शुरू कर देता है। संग्रह बहुत ज्यादा नहीं करता, उसको बाँटने का मज़ा आता है, उसको देने का मज़ा आता है। वो अपनी जो Virtues जो Goodness हैं उसको Enjoy करते हैं। वो अगर सच बोलता है तो उसका मज़ा उठाता है। आपने बहुत से लोग देखे होंगे जो कहते हैं

ईमानदार लोगों का दुनिया में कोई ठिकाना नहीं। ये बेवकूफी की बात है। आप ईमानदार हैं यही तो मज़े की चीज़ है। सब बेइमान हैं और आप ईमानदार हैं, ये बड़ी शान की चीज़ है। ये आपका गौरव है, आपका ताज है। उसके लिए आप कहते हैं कि ईमानदार की कोई दुनिया में पूछ नहीं। पूछ काहे को लगाने को चाहिए? इसकी क्या ज़रूरत है? अरे आप ईमानदार आदमी हैं दुनिया में लोग कहते हैं कि शास्त्री जी इतने ईमानदार थे कि जब मरे थे तो वे कर्ज अपने छोड़ गए। अब वो कर्ज छोड़ गए यही उनका गुण हो गया। देखिए सारी दुनिया इन्हीं का उनको गुण दे रही है कि उन्होंने debts छोड़ दिए। अपने गुणों पर आदमी को आनन्द आता है, अपने गुण से वो प्लावित होता है। एक सती स्त्री है वो अपने सतीत्व और अपने पतिव्रत्य के आनन्द में रहती है। अपने गुणों का आनन्द आता है अपने मज़े का आनन्द आता है। आप कोई शराबी को देखते हैं कि वो शराब पी रहा है तो आपको उस पर दया लगती है कि भई मैं तो आराम से बैठा हूँ, ये कहाँ मरा जा रहा है? फिर ये नहीं लगता कि ये शराब पी रहा है और मैं तो बिल्कुल ही पुराने ढंग का हूँ। मैं तो बिल्कुल पी नहीं पाता। हीन भावना की जगह आदमी को ये लगने लगता है कि ये आदमी पता नहीं कहाँ ये दयनीय दशा में आ गया? उल्टी ही दशा आ जाती है। हँसी आने लगती है और बेवकूफी पर उसको आश्चर्य लगता है। जब ऐसी कोई बातें करता है तो उसको लगता है कि ये कैसा बेवकूफ आदमी है? कैसी बात कर रहा है? अभी भी लोग मुझसे कहते हैं कि माताजी यहाँ तो ऐसा है कि अगर आप शराब नहीं पियो तो आपकी कोई इज्जत नहीं करता। मैंने कहा सच्ची



बात है? ऐसा तो कभी हो ही नहीं सकता। वास्तविक में ऐसा नहीं हो सकता। असल में वो आपसे इसलिए भिड़ते हैं कि उनको लगता है कि मेरी दुम कटी है और इसकी क्यों नहीं कटी? इसीलिए आपके पीछे पड़ते हैं। लेकिन ग़र आप ये उनको ज्यादा न जताएं कि हम शराब नहीं पीते हैं पर उल्टी तरह से बातें करें। इसमें कृष्ण की Diplomacy करनी चाहिए कि ऐसे कहें मैं आजकल इतना खुशहाल हूँ बड़ा मज़ा आता है मुझे। घर में आराम से खाता पीता हूँ, मुझे आजकल कोई तकलीफ़ नहीं। उन्होंने कहा क्यों भई? मैंने कहा शराब छोड़ दी न तो वो पैसा सब बच गया। फिर इतना मज़ा आता है, बच्चों को लेकर मैं घूमता हूँ। बड़ी मेरी मज़े की जिन्दगी है। वो फिर सोचेगा कि अरे ये तरीके होते हैं। उससे आप दुनिया बदल सकते हैं। इस तरह से संसार में राम-राज्य आ जाएगा। सतयुग तो शुरू हो ही गया है, इसमें शंका ही नहीं है क्योंकि सतयुग के ही असर आ रहे हैं। कोई भी बात छिपने वाली नहीं। कार्टर साहब ने एक छोटी सी बात कह दी, वो भी बाहर आ गई। कोई किसी की बात छिपने नहीं वाली, सब लोग सामने आ जाएंगे सबका पता हो जाएगा, कौन कहाँ है क्या है। कौन कितनी गहराई में है सब प्रकाशित हो जाएगा। अब वो दिन नहीं रहे कि आप कोई भी चीज़ छिपा कर कर लें। एक आदमी दूसरे को खींचेगा, एक ईमानदार आदमी होगा उसको लोग खींचना चाहेंगे तो वो खिंच नहीं पाएगा क्योंकि उसको समाज, जनता उसकी मदद करेगी। ये सतयुग के लक्षण हैं और ये शुरू हो गए हैं। कोई भी आदमी बहुत ग़र दुष्ट हो वो भी चल नहीं पाएगा। सबका जिसे कहना चाहिए कि

Cosmic Change आ जाएगा और आ ही रहा है। उसको आप लोगों को देखना चाहिए और सोचना चाहिए कि माँ ये कहती थीं, सच था। और आप अपनी स्थिति बनाएं इसी चीज़ में और आप ही वहन करें इस शक्ति को और सारे संसार को भी दें। उसके लिए आपको रुपया पैसा खर्च करना नहीं, आपको कुछ भी देने का नहीं, सिर्फ़ ये कि आप अपना Instrument ठीक कर लें। इस Instrument के लिए आपको ध्यान धारणा आदि करना पड़ता है। इसके लिए जो भी ये लोग Programme करते हैं दिल्ली में, जो भी इनके पास सहूलियतें हैं, इनका नम्बर आप फिर से लिख लें, E-288 पंडारा रोड, आप वहाँ पर खबर लें E-288 पंडारा रोड, यहाँ उनसे बातचीत करें। Every Friday 6 to 7 वहाँ आप जब भी फ़ोन करें वे बताएंगे इस बारे में। आज बहुत दिनों बाद एक किताब भी प्रकाशित हो गई है वो भी आप ले लें। उसमें भी आप समझ लें कि कुण्डलिनी क्या चीज़ है और उसमें क्या क्या घटित होता है और किस तरह से ये कार्यान्वित होती है। इसमें कौन सी कौन सी विशेषता है। ग़र आप इस चीज़ को बिठा लें अपने अन्दर समालें, इसमें रजें, तब मज़ा आएगा। रे रजने वाली चीज़ है। अब वो समय आ गया है। परमात्मा का साक्षात्, सत्य का साक्षात्, जो कुछ लिख गए हैं उसका fulfillment, उसका Completion, उसकी पहचान, पूरी तरह से आप चैतन्य लहरियों से कर सकते हैं क्योंकि आपके अन्दर एक नई चेतना जिसको वाइब्रेटरी चेतना कहते हैं, चैतन्यमय चेतना आ गई है, माने जो भी awareness है उसमें light आ गई है। उसके माध्यम से आप सिद्ध कर सकते हैं कि परमात्मा है

या नहीं, परमात्मा की शक्ति क्या है, किस तरह से चलती है, ये हमारे अन्दर चक्र हैं या नहीं, चक्रों में देवी देवता हैं या नहीं। हम लोगों का किस तरह से उत्थान होता है? किस तरह से हम दूसरों को ठीक कर सकते हैं, किसमें क्या बीमारी है, अनेक छोटी छोटी चीज़ों का आप निर्णय कर सकते हैं। जैसे कि एक साहब आये, कहने लगे माँ हम बाजार गए तो समझ नहीं पाये कि ये चीज़ खरीदें या नहीं खरीदें। मैंने कहा आप वाइब्रेशन देख लेते। एक बार हम जा रहे थे तो किसी ने कहा कि एकदम हमें वाइब्रेशन आए तो हमने सोचा कि माँ कहीं आयी होंगी और पहुँच गए वहीं पे। कहने लगे देखो माँ हमको तो वाइब्रेशन आये, हम पहुँच गए यहाँ। स्टेशन पर एक दिन ये परेशान थे कि अभी तक पहुँची नहीं माँ, तो उनके एक दम वाइब्रेशन आए कि माँ तो पहुँच गई। हम भी वही पहुँच गए। तो वाइब्रेशन जो हैं वो आपस में बोलते रहते हैं बताते रहते हैं, बराबर ठीक ठाक करते रहते हैं। इतने कमालात हैं, इतने कमालात हैं कि हम आपको बता नहीं सकते। उदाहरण के लिए साहब यहाँ दिल्ली में आए हमने आपसे बताया, यहाँ आए और उन्होंने कहा कि हम तो जानते नहीं कि दिल्ली में जाएँ कहाँ। तो उसने कहा कि माँ को याद किया, इतने में सामने देखते हैं कि एक साहब चले आ रहे हैं! तो उन्होंने कहा आप कौन हैं? तो कहने लगे मैं तो माँ का भक्त हूँ मैं भी माँ का भक्त हूँ। उन्होंने उनके Vibration देखे, कहने लगे हम तो आपको जानते हैं। आपको माताजी निर्मला देवी ने जागृति दी है? कहने लगे हाँ। आपने कैसे पहचाना? कहने लगे Vibration आ रहे हैं, आपके भी आ रहे हैं। चलो। दोनों की दोस्ती हो

गई। ये पहचान हो गई कि हम एक ही माँ के बेटे हैं। चाहे आप अमरीका चले जाओ। एक साहब अमरीका गए उनका भी ऐसा ही हाल हुआ। उन्होंने कहा I was lost, वहाँ एक साहब मुझे मिले तो उन्होंने कहा कि साहब आपके Vibration आ रहे हैं। मुझे भी Vibration आ रहे हैं। कहने लगे आप माताजी के भक्त हैं? कहने लगे हाँ। तो कहने लगे चलो भई, अपने चलें एक साथ। इसी तरह से अनेक काम बनते जाते हैं। जहाँ जाइए वहाँ Vibration से पता चलता है, ये सुगन्ध है न। हरेक आदमी पहचान लेता है। कुत्ते बिल्लियाँ तक आपको पहचान लेंगे कि आप Vibration वाले आदमी हैं। छोटे छोटे बच्चे भी पहचान लेते हैं। बताते हैं कि स्कूल में हमारे यहाँ पाँच लड़के हैं, वो हैं पार। बाकी नहीं हैं। कौन पार है, कौन नहीं, फौरन पता चल जाता है। जो पार है वो हमारा भाई हुआ या बहन हुई, क्योंकि माँ के ही तो सब बच्चे हैं। ये नई चीज़ अन्दर में आ जाती है। और आप सोचो आपके कितने भाई बहन इंग्लैण्ड अमरीका में हैं। उस तरह के नहीं जैसे गुरुजी लोगों के होते हैं, उस तरह के नहीं, ये असली हैं। ये आपके लिए दौड़ेंगे। आपके लिए सब काम करेंगे। एक साहब राहुरी से जा रहे थे, अपने बोरे ले जा रहे थे, चीनी के बोरे ले जा रहे थे, ऊपर से बरसात हो गई। उनके सब बोरे भीग गए। उन्होंने कहा कहीं रोकेंगे तब होगा, नहीं तो हमारी तो सारी चीज़ बेकार हो गई। इतने में जाकर कहने लगे कि अच्छा चलो कहाँ जाएँ? जहाँ रुक जाए वहीं रोको। जहाँ रोका वहीं पर Vibrations आने लगे। उन्होंने कहा यहाँ कहाँ Vibration? तो देखा। वहाँ रास्ते पर हमारा Board लगा है। कहने लगे यहाँ कहाँ हमारा



Board लगा है? अन्दर गए तो बंगले के अन्दर में जहाँ पर हमारा Centre! उन्होंने कहा आओ भई, तो उन्होंने कहा हम तो देखते देखते आए, भुलिया में बैठी हुई हैं। जहाँ हम गए उन्होंने हमसे बताया है। फिर उन्होंने हम से पूछा हौं वो आए थे हमारे पास। एक साहब बैठे हुए थे, सवेरे उठकर देखा तो बोरे-बोरे सब सुखे हुए थे। फिर वो उठ गए, जितना पैसा था उतना मिल गया। लक्ष्मी जी की कृपा तो बड़ी होती है। इसमें कोई शंका नहीं। असली होती है। असली लक्ष्मी जी की कृपा होती है। एक हमारे पास एक साहब आते थे, बहुत दूर से, काल्वा से बड़े शरीफ आदमी, परन्तु गरीब थे खेती का काम करने वाले आदमी। मैंने उनसे कहा हर बार एक-एक हार लेकर आते हो? कितना खर्चा पड़ता होगा? क्यों इतनी परेशानी करते हो, हर बार नहीं करना चाहिए? कहने लगे माँ तुम्हारी कृपा से लक्ष्मी जी की कृपा हो गई। कहने लगे हमारा एक खेत था वैसे ही पड़ा रहता था। उसको हम जोतते नहीं थे क्योंकि उसमें मिट्टी ज़रा चिकनी ज्यादा थी। कोई सिंधी आए, कहने लगे तुम्हारी मिट्टी बड़ी अच्छी है हमको दोगे? कहने लगे, किसलिए? कहने लगे ईंट बनाने के लिए। तो उसको दस गुना दाम उसी मिट्टी का मिलता था, खेत का खेत उसी तरह बना रहा। अब उसकी मिट्टी उठाकर ले जाने का दस गुना दाम मिला। कहने लगे आपकी कृपा से हुआ, सहजयोग के बाद हुआ, कहने लगे हम कभी सोच भी नहीं सकते थे। ऐसे अनेक लोगों को फायदे हुए हैं। तो आपके Promotions भी हो जाते हैं, सरकारी नौकरों को बहलाने के लिए कह रही हूँ। पहली चीज़ Promotion होना चाहिए, Promotion हो जाएगा,

आप अजातशत्रु हो जाते हैं। आपके शत्रु जो हैं आपके हट जाते हैं। Private वालों का भी फायदा हो जाता है, लेकिन सब से बड़ी चीज़ है कि अपनी नाभि साफ रखनी पड़ती है। आपकी नाभि खराब है और आप चाहें कि लक्ष्मी जी जागृत नहीं हुई और नाभि साफ करने के लिए शुद्धता रखनी पड़ती है उसके बारे में सोचना पड़ता है। एक साहब थे हमारे यहाँ आए, कहने लगे हमारे यहाँ कोई आता ही नहीं, हमारी दुकान ही नहीं चलती है। पूने की बात है। तो हमने कहा हम आएंगे, हम उनकी दुकान पर गए उनको जागृति दी, तो दुकान ऐसे चलने लगी कि अब बहुत ही Busy हो गए, अब वो बहुत बड़े आदमी हो गए, अब वो हमें मिलने भी नहीं आते। हर बार याद करते हैं। अरे फिर इतना Time नहीं मिलता, ये Business है वो Business है। हम दो बार पूना गए मिलने भी नहीं आए। और जब पहली मर्तबा हम वहाँ गए थे तो वो गरीब थे बेचारे, गरीब माने उनका चलता नहीं था। हमें याद है हम रिक्शा में बैठकर गए, मोटर थी नहीं, रिक्शा में बैठकर गए, तो पूरी समय रोते गए माँ आप चली जाओगी, हमारा कैसा होगा? अब ये हाल है अब हम वहाँ गए तो मिलने भी नहीं आए। तो ऐसे पैसे से भी क्या फायदा? मतलब क्या है कि समझ में आ जाता है, wisdom आ जाता है, संतुलन आ जाता है, क्योंकि आप समझते हैं Vibrations में, आप चाहते हैं ये चीज़ लें, फिर समझते हैं कि Vibrations ठीक नहीं हैं, छोड़ो। छूटते जाता है, आदमी साक्षी स्वरूप हो जाता है। देखता है नाटक सब। आज कितने लोग पार हुए, देखते हैं, हाथ ऐसे करें।